# परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

## दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रम

विषय :- हिन्दी  कक्षा :- छठवीं  पुस्तक :- बाल रामायण

शीर्षक :- जंगल और जनकपुर  मॉड्यूल :- 1/2

प्रस्तुत कर्ता :- सत्यवीर गिरि (परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, कुडनकुलम)

## पाठ का सारांश

**राम-लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ वन गमन** :- प्रस्तुत पाठ में दोनों भाई राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ यज्ञ की रक्षा हेतु वन के लिए प्रस्थान करते हैं| राजमहल से निकलकर वे लोग सरयू नदी की ओर बढ़े| दोनों राजकुमार महर्षि के पीछे-पीछे चल रहे थे| चलते-चलते एक टेड़ा मोड आया जिससे अयोध्या की आखरी बस्ती भी दिखनी बंद हो गई| सारा दिन चलने के बाद भी दोनों राजकुमार थके नहीं थे, वे और भी चलने के लिए तैयार थे| विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को बाला-अतिबला नामक विद्याएँ सिखाईं| सभी ने वहीं सरयू नदी के तट पर रात्रि विश्राम किया|

**स्थानीय इतिहास की जानकारी** :- अगली सुबह यात्रा प्रारम्भ हुई| अब उन्हें घने जंगलों से होकर यात्रा करनी थी| अब राम-लक्ष्मण ने महर्षि के थोड़ी कम दूरी बनाकर चलना प्रारम्भ किया|महर्षि उन्हें स्थानीय इतिहास की जानकारी बताते चल रहे थे| चलते-चलते वे एक ऐसे घने जंगल में पहुँचे, जहाँ सूर्य का प्रकाश भी जमीन तक नहीं पहुँच पता था|

**ताड़का का वध** :- विश्वामित्र के वार्तालाप से राम-लक्ष्मण को पता चला की इस सुंदर वन में एक ताड़का नाम की राक्षसी रहती है, जिससे इस वन का नाम 'ताड़का वन' पड़ गया है| जो यहाँ बहुत उत्पात मचाती रहती है| विश्वामित्र की आज्ञा से ताड़का राक्षसी को क्रोधित करने के लिए राम ने धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर और खींचकर छोड़ दिया| जिसकी टंकार सुनकर ताड़का क्रोधित होकर बाहर आती है| अपने सामने छोटे-से दो बालकों को देखकर उसका क्रोध और अधिक बढ़ जाता है| वह उनपर कंकड़-पत्थर की बरसात करती है| राम-लक्ष्मण भी उस पर बाणों की बौछार कर उसको छलनी कर देते हैं| राम जी का एक बाण उसके हृदय मे लगता है| जिससे उसके प्राण-पखेरू उड

जाते हैं| इससे प्रसन्न होकर विश्वामित्र ने उन्हें सौ तरह के अस्त्र-शस्त्रों की विद्याएँ सिखाईं| वे सभी रात्रि विश्राम उसी वन में करते हैं क्योंकि वह सुंदर वन भयमुक्त हो चुका था|

**<u>सिद्धाश्रम प्रवेश</u>** :- अगली सुबह तीनों जन विश्वामित्र के सिद्धाश्रम की ओर प्रस्थान करते हैं| आश्रमवासियों को विश्वामित्र का पुन: आगमन तथा राम-लक्ष्मण के दर्शन दो सुख एक साथ प्राप्त होते हैं|

**<u>यज्ञ-रक्षा का भार राम लक्ष्मण–पर</u> :-** अगली सुबह विश्वामित्र राम लक्ष्मण पर यज्ञ रक्षा का भार सौंपकर आश्रमवासियों के साथ अनुष्ठान पूरा करने हेतु तत्पर होते हैं| अनुष्ठान कुछ दिनों में पूरा होने वाला था| राम-लक्ष्मण भी पूरी तल्लीनता के साथ यज्ञ की रक्षा मे संलग्न थे|

**मुख्य बिंदु :-**

- इस पाठ में प्रकृति की सुंदरता का वर्णन किया गया है| प्रकृति की सुंदरता वनों, पहाड़ों, नदियों, झरनों, एवं तालाबों से होती है| हमें इसकी प्राकृतिक सुंदरता को बनाए रखने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए|
- ताड़का एक राक्षसी थी जिसने प्रकृति की सुंदरता (वन) को नष्ट करने का प्रयास किया| जो राम के द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुई |
- जब मनुष्य प्रकृति का बहुत ज्यादा दोहन करने लगता है, तो प्रकृति अनेक प्रकार की विपदाओं के साथ अपना संवर्धन करना प्रारम्भ करती है |
- इस पाठ से हमें प्रकृति के साथ रहने एवं उसकी रक्षा करने की सीख मिलती है |
- राम-लक्ष्मण :- राजा दसरथ के पुत्र हैं | राम की माता कौशल्या हैं जबकि लक्ष्मण की माता सुमित्रा हैं |
- विश्वामित्र :- सिद्धाश्रम के महर्षि हैं | जो यज्ञ रक्षा हेतु राम-लक्ष्मण को अपने साथ सिद्धाश्रम लाए हैं |